आत्मिक टुकड़े
खाने–लायक हिस्सों में

First Printing 2008
Second Printing 2014
"In the memory of Bro. Cortez Scott"

ISBN 978-1-934530-01-6

GOD IS YOUR LIFE PUBLICATIONS
MARK SLAY MINISTRIES
P.O. BOX. 31012
ST. LOUIS, MO 63131

LIFE OF FAITH MINISTRIES
V.P.O. UCHAPIND, (SANGHOL),
TEHSIL KHAMANO, DISTRICT FATEH GARH SAHIB,
PUNJAB , 140802

Copyright ©2006 Mark Slay
All Rights Reserved
Printed in India

भूमिका

यह पुस्तक उन सत्यों का संग्रह है जिन्हें मैंने बीते वर्षों में पवित्र आत्मा से प्राप्त किया है। ये सत्य अपने आप में नए नहीं हैं बल्कि तब से ही अस्तित्व में हैं जब ये सत्य के आत्मा ने स्वयं इन्हें दृढ़ किया है। फिर भी मैंने पाया कि पवित्र आत्मा ने इन सत्यों को जिस प्रकार प्रगट किया है, उस से न केवल बहुत सारी बातें मेरे लिए स्पष्ट हुई हैं बल्कि इस पुस्तक को पढ़ने वालों ने भी कहा है कि ''जब आपने इन बातों को इस तरीके से कहा तो ये बातें हमारे लिए भी बहुत स्पष्ट हो गईं हैं''।

इस पुस्तक का यही उद्देश्य है कि आप के साथ उन सत्यों को बाँटना जो मेरे लिए बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं। हो सकता है कि ये सत्य नये न हों, और कुछ में तो केवल वचन को ही दोहराया गया है, परन्तु शायद जिस तरीके से इन्हें व्यक्त किया गया है, वह इस प्रकार से है ताकि आप उन्हें और अधिक स्पष्टता से देख सकें।

अधिकतर विचार मुझे व्यक्तिगत रुप से स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा दिए गए हैं, परन्तु कुछ सत्य दूसरों के जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य है, लेकिन वे इतने सही बोले गए हैं कि मैंने सोचा कि उन्हें इस पुस्तक में शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि वे हम सभी की सहायता करेंगे।

अंत में, हो सकता है कि कुछ सत्य तुरन्त आप के ऊपर प्रकाशमान हो जाएँ, और आपकी आत्मा को कुछ सत्यों को देखने में समय लग सकता है। हम में से कोई भी नया जन्म पाने के समय में पूर्ण–विकसित नहीं था, हम अपने समझने की क्षमता में बढ़ते हैं और परमेश्वर के राज्य के सत्यों को देखते हैं। हम परमेश्वर की बातों को केवल अपनी बुद्धि से नहीं बल्कि अपनी आत्मा से देखते हैं, और हो सकता है कि उसमें समय लगे। उन्हें तब तक बार–बार खाते रहें जब तक कि वे आपके ऊपर प्रकाशमान न हो जाएँ।

मार्क स्ले

विषय सूची

अलौकिक और विश्वास.....1

सत्य और परमेश्वर को जानना.....7

परमेश्वर की सेवा और पवित्रता.....15

चरित्र के बारे में 21

प्रेम.....25

अनन्तता.....27

अलौकिक और विश्वास

परमेश्वर में सच्चे विश्वासियों के पास अलौकिक है।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के पास अलौकिक था।

जब प्राप्त करने की बात आती है, आपके पास उसके लिए विश्वास होना जरूरी है।

भलाई करने में प्रभु पर विश्वास करना शामिल है – उसको उसके वचन के अनुसार लेना।

आपके भले काम ही काफी नहीं हैं, विश्वास करने के द्वारा उसके विश्राम में प्रवेश करें।

आप मुसीबत में पड़ जाते हैं जब आप शरीर के अनुसार और जो आप देखते हैं उसके अनुसार चलते हैं।

एक मसीही को पवित्र आत्मा के बहाव में चलना चाहिए, केवल पवित्र आत्मा से भरना ही नहीं।

हम, जो परमेश्वर के हैं, हमें सुरक्षा का दावा करने का अधिकार है।

अन्यभाषा में बोलने में आपकी बुद्धि कुछ काम नहीं करती।

परमेश्वर चाहता है कि हमारा आनन्द पूरा हो। वह आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देना चाहता है।

जो अनदेखा है उसकी प्रतीति करने के लिए विश्वास होना एक माँग है।

हरेक बात जो आपके लिए कार्य करती है वो आपके हृदय से आती है।

जब कोई आयत आपके लिए कार्य करती है यह तब होता है जब आप अपनी आत्मा से विश्वास करते हैं।

पवित्र आत्मा की सामर्थ आपको कैदखाने से निकाल कर महल में ले जाती है, परन्तु महल

से झोंपड़ी तक का रास्ता छोटा होता है, चीज़ें जल्दी से बदल सकती हैं।

आप आत्मा में उन बातों को अनुभूति/महसूस कर सकते हैं जिन्हें आप शरीर में नहीं देख सकते।

बाईबल (वचन) के साथ व्यर्थ की बहस न करें, बस इसे स्वीकार कर लें।

यदि सब कुछ हर समय बढ़िया ही दिखता तो आपके पास विश्वास करने का कोई कारण ही न होता।

शैतान आपको तर्क–वितर्क के क्षेत्र में खींचना पसंद करता है, परन्तु विश्वास असम्भव पर प्रतीति करता है।

केवल जब आपके मुँह का अंगीकार आपके हृदय के अंगीकार के साथ मेल खाता है तब ही विश्वास आपके लिए कार्य करता है।

आपको वही मिलता है जो आप कहते और प्रतीति करते हैं, वह नहीं जो आप केवल कहते हैं।

अपनी सोच के अनुसार चलना बन्द कर दें और परमेश्वर के कहे अनुसार चलना शुरु करें।

वही करें जो पवित्र आत्मा आपकी आत्मा में कह रहा है, वह नहीं जो आपका सिर (दिमाग) आपको कह रहा है। निश्चय कर लें कि यह पवित्र आत्मा ही है।

प्रार्थना का उद्देश्य ग्रहण करना और विजयी होना है, केवल प्रार्थना करना ही नहीं।

यीशु में शैतान हमारे मुकाबले में कुछ नहीं है। दूसरी तरफ, हम शैतान के मुकाबले में नहीं है।

परमेश्वर चाहता है कि आप विश्वास को जानें और अभ्यास करें, परिभाषा के द्वारा नहीं बल्कि प्रगटीकरण के द्वारा।

ऐसी क्रिया करें कि आप परमेश्वर से अपेक्षा कर रहे हैं कि वह आपको उत्तर देगा।

झूठी दिखावे की क्रिया मत करें, सचमुच में विश्वास करें कि जो आपने माँगा है उसे वह देगा।

अपने आप को सुरिक्षत रखना – विश्वास के स्थान में बने रहें।

1. अपने मन में ऐसा निश्चय कर लीजिए कि आप हार नहीं मानेंगे, आप जीतेंगे, और विश्वास रखेंगे।
2. वचन पढ़ने और उसकी उपस्थिति में अतिरिक्त समय बिताएँ।
3. सांसारिक और नकारात्मक प्रभावों से दूर रहें।
4. यदि जरुरी हो तो उपवास करें, परन्तु अपनी समस्या में ही न बने रहें।
5. तब तक दृढ़ता में बने रहें जब तक कि आपको यह प्रकाशन न मिल जाए कि आपको मिल गया है। आपको यह जानना ही होगा कि आपको मिल गया है।

ऐसे चलो जैसे कि तुम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हो – क्योंकि तुम करते हो।

कईयों ने अन्यभाषा के साथ बोलने के बारे में कहा, ''ऐसा लगता है कि बस मैं ही बोले जा रहा हूँ।'' मजाक मत करें! आप नहीं तो और कौन बोलेगा?

पवित्र आत्मा कभी भी अन्यभाषा में नहीं बोलता, मनुष्य बोलते हैं।

कई कहते हैं, ''मैं नहीं जानता कि मैं अन्यभाषा में क्या बोल रहा हूँ। मज़ाक नहीं है! यदि आप इसे समझ जाते तो यह अन्यभाषा ही न होती, क्या यह होती?

पवित्र आत्मा केवल आपको बोलने के लिए शब्द या उभार देता है, बोलने का काम आपका है। अवश्य है कि आप इन शब्दों को सुर स्वयं दें और ये आपके लिए अनजाने होंगे।

सत्य और परमेश्वर को जानना

वह सत्य जिसे आप अपनी आत्मा में जानेंगे, वह आपको स्वतन्त्र करेगा, उसे केवल याद (कंठस्थ) करने से नहीं।

यदि परमेश्वर आपको कुछ दिखाता या कुछ प्रगट करता है तो वह इसके लिए आप पर भरोसा रखता है। अवश्य है कि आप अपने विषय में सावधान हों। यदि आप इस में असफल हो गए, तो आप अपने भण्डारीपन में भी असफल हो गए।

आप जो जानते हैं उससे फँसने वाली चालों में नहीं फँसते बल्कि जो आप नहीं जानते उसके कारण फँसते हैं।

आप जितना जानते हैं, उतना ही जानने के लिए नहीं है। जीवन की एक सबसे महान्तम सच्चाई यह है कि ''आप नहीं जानते कि आप कितना नहीं जानते हैं।''

आप तब तक यह सोचते हैं कि आप बहुत कुछ जानते हैं जब तक परमेश्वर का वचन आपको आपकी अज्ञानता को नहीं दिखाता।

यदि आपकी अगुवाई गलत हुई है तो गलती आपकी है।

यह शिक्षा के द्वारा नहीं, परन्तु प्रकाशन के द्वारा होता है।

आयत को याद (कंठस्थ) करने से आपकी कोई मदद नहीं होती, परन्तु आपके हृदय में इसके प्रकाशन से आपकी मदद होती है।

कोमल हृदय वह है जो सत्य को आसानी से समझ लेता है।

परमेश्वर पूर्णरूप से भला है – शैतान समझ से परे निर्दयी है।

परमेश्वर, भला – शैतान, बुरा।

परमेश्वर की ओर से ज्योति प्रगतिशील है।

आपकी स्वेच्छा निर्धारित करेगी यदि आप सत्य को पहचानते हैं।

जो उलझन में हैं उनके लिए ही बाईबल उलझन है।

सही शिक्षा प्राप्त करना केवल शिक्षा प्राप्त करने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

कोई भी दुष्टात्मा नई नहीं है, वे बहुगुणित नहीं हुई हैं। आज भी वही दुष्टआत्माएँ तंग करती हैं जो मूसा की पीढ़ी के लोगों को, दाऊद की पीढ़ी के लोगों को और यीशु की पीढ़ी के लोगों को तंग किया करती थीं। उनकी संख्या न तो बढ़ी है और न ही घटी है।

समलैंगिकता गलत है : यहाँ तक कि पशुओं का संसार भी इसे जानता है, क्या आपको कभी किसी कुत्ते को किसी कुतिया के साथ रिश्ता बनाना सिखाना पड़ा है? (क्या आपको उन्हें यह सिखाने के लिए किसी स्कूल में भेजना पड़ा?) नहीं, यह स्वाभाविक है, यह वही है जो ठीक है। परमेश्वर ने इसे ऐसा ही बनाया है।

नये नियम को वैसे पढ़ें जैसा यह लिखा गया है, वैसे नहीं जैसे आप सोचते हैं कि इसे लिखा जाना चाहिए था।

गलत होना गलत नहीं है –गलत बने रहना गलत है।

आपके साथ जो कुछ भी होता है उसमें पूरी तरह आपकी इच्छा होती है।

उसे आप अन्धकार में कभी मत भूलिए, जिसे आप ज्योति में जानते थे कि सत्य है।

''स्वाभाविक'' क्षेत्र में जो कुछ भी रचा गया है, वह आपको ''आत्मिक'' क्षेत्र और परमेश्वर के राज्य में कुछ (कुछ सिद्धांत) सिखाने के लिए रखा गया है।

सारे ब्रह्माण्ड में केवल यीशु ही सुरक्षा का एकमात्र स्रोत है।

यदि आपके विश्वास और चलन में कोई दिखावा है तो शैतान खोज निकालने में बहुत

ही माहिर है। यदि आपका घर रेत पर बना है तो अखिरकार वह इसे जान जाएगा।

किसी भी आत्मिक प्रश्न का पूरा उत्तर बाईबल के किसी एक हिस्से में नहीं मिलता, यह बाईबल के शुरू से अन्त तक गुंथा हुआ मिलेगा।

आप जो कुछ देते हैं उसके द्वारा जीवित रहते हैं, जो कुछ ले सकते हैं उसके द्वारा नहीं।

एक गलत कदम को उठाने के बारे में सावधान रहें। शैतान तब आपकी आँखों पर पर्दा डाल देगा, जिससे दूसरा गलत कदम भी आसानी से उठ जाएगा। इसी प्रकार लोग इसे बिना जाने और पहचाने धीरे–धीरे अच्छे से बुरे और बुरे से बदतर हालातों में चले जाते हैं। यह अन्धकार में उठाए गए उस पहले गलत कदम के कारण होता है।

एक ऐसे पासबान को ढूँढें जो आपको सुधारने से न डरता हो – आपको उसकी जरुरत है।

अनुशासन और सुधार हमेशा असिद्ध लोगों के द्वारा ही लागू किया (लाया) जाता है। जब भी आवश्यकता हो तो माता–पिता अपने बच्चों को सुधारने से न डरें। पासबानों अपनी मण्डली को सुधारने से न डरें, क्योंकि वे भी आपके बच्चे ही हैं।

इस जीवन की हर सकारात्मक चीज़ में कुछ नकारात्मकताएँ भी हैं। सम्पन्नता, आदर, चंगाई और सौभाग्य के साथ खतरनाक ज़ोखिम शामिल हैं।

हियाव केवल तभी अच्छा होता है, जब आप सही हैं।

यीशु ने अपने बारे में जो कहा कि वह कौन है, उस दावे की जाँच करते हुए हम पाते हैं कि वे अपने आप में एक प्रमाण है कि जो उसने अपने बारे में कहा वह वही है, अन्यथा वह कोई सिरफिरा था।

उसने दावा किया कि वह परमेश्वर है जो देह धारण करके आया और वह है भी।

यीशु के दावों की जाँच करते हुए, यह प्रतीति करना असम्भव जान पड़ता है कि वह एक भविष्यद्वक्ता या एक अच्छा शिक्षक था। उसने परमेश्वर होने का दावा किया, इसलिए यदि वह परमेश्वर नहीं था तो वह एक भविष्यद्वक्ता या अच्छा शिक्षक भी नहीं हो सकता था।

सावधानी की कमी के कारण गलती हो सकती है। बहुत से फैसलों के बारे में बिल्कुल भी सावधान न होने की बजाय जरुरत से ज्यादा सावधान होना बेहतर है। परन्तु सर्वोत्तम यह है कि न तो जरुरत से ज्यादा सावधान हों और न ही नादान लापरवाह हों, बल्कि सही फैसले लें।

यदि उद्धार के लिए खुले होने वाले प्रत्येक व्यक्ति के माथे पर निशान लगा दिया जाता तो हमारे लिए यह जानना आसान हो जाता कि किसे सुसमाचार सुनाना है। परन्तु ऐसा नहीं होता, इसलिए जाओ और पता लगाओ कि सुसमाचार के लिए कौन खुला है।

आप अपनी पदवी पर तो सही हो सकते हैं, परन्तु अपने बर्ताव में गलत हो सकते हैं।

आप जिस सबसे बड़े शत्रु का सामना करेंगे वह है आपकी अपनी इच्छा।

यदि आप परमेश्वर की इच्छा के अधीन नहीं हैं, तब आपको परमेश्वर के साथ परेशानी होगी।

यदि आप परमेश्वर की इच्छा की अधीनता में नहीं हैं तो आप अधीनता में नहीं हैं।

शैतान आपका विनाश करने में इतना अधिक रुचि लेता है कि वह अपने कामों को आपके जीवन में बढ़ाएगा और अपनी वास्तविकता को आपके ऊपर और ज्यादा प्रगट करेगा।

परमेश्वर की सेवा और पवित्रता

यदि आप सांसारिक बातों में बहुत ज्यादा व्यस्त हो जाएँ तो आप सुसमाचार से भटक जाएंगे।

परमेश्वर सुसमाचार को सारे संसार में अपने द्वारा नहीं भेजता – वह इसे हमारे द्वारा भेजता है।

आप संसार में इतना ज्यादा खो जाएँ तो यह पवित्र आत्मा को आपके भीतर से सुखा देगा।

किसकी अच्छी परिभाषा आप हैं –आपकी या परमेश्वर की?

अपने मन को उन बातों से न भरें जिन्हें शैतान आपके पास लाता रहता है।

अपने घर में ऐसी चीज़ों को मत लाएँ जो शैतान के लिए द्वार खोलती हैं, जैसे गलत फिल्में या संगीत।

शैतान धीरे–धीरे काम करता है। ''छोटे'' बदलावों के बारे में सावधान रहें।

शैतान चलन (गति) को समझता है, यदि आपमें अच्छी बातों के लिए चलन (गति) है तो वह इसे रोकने की कोशिश करेगा, यदि शैतान आपके जीवन में बुरी बातों के लिए चलन (गति) ले आता है तो वह इसे अवश्य जारी रखेगा, क्योंकि वह चलन (गति) के मूल्य को जानता है।

परमेश्वर आपकी गलतियों को कभी भी इसलिए माफ नहीं करेगा क्योंकि आप बाकी काम सही करते हैं।

गलत कामों के लिए द्वार को कौन बन्द करेगा – आप।

ऐसा नहीं हो सकता कि आपका एक पाँव संसार में हो और दूसरा पाँव प्रभु के साथ।

हर तरफ से खिंचाव इतना ज्यादा होता है कि यह आपसे माँग करता है कि आप एक को या दूसरे को चुनें।

मूर्तिपूजा वह कुछ भी है जिसमें आपका लगाव या रूचि परमेश्वर या उसके काम से ज्यादा है।

जो हमें चाहिए उसे परमेश्वर से प्राप्त करने के लिए प्रयास करना होता है।

मतभेद में भी शांत रहना सीखें।

यदि आप शैतान से बदला लेना चाहते हैं तो – सही काम करें – सही जीवन जीएँ – ऐसा करके आप शैतान से बदला ले सकते हैं।

आपकी गलत करने की इच्छा आपके लिए परमेश्वर की इच्छा से ज्यादा ताकतवर है।

पाप आपको कठोर बना देता है।

अपनी मसीहियत में सुरक्षित रहें। मसीहियत परमेश्वर का मार्ग है, विराम।

आपके कामों को देखकर हम वह सब जानते हैं कि आप क्या प्रतीति करते हैं।

आप उसी हद तक आज्ञाकारी हैं जितना आप पिता को सुनते हैं। बाईबल की कौन सी आयत है जिसका आप आज्ञा–पालन नहीं करते?

आपको पवित्र आत्मा से भरना ही होगा; अन्यथा आप अन्य वस्तुओं से भर जाएँगे।

ऐसा न हो कि प्रभु के आगमन के समय आप अईश्वरत्व में फँसे हुए हों। अईश्वरत्व में कभी भी न फँसे रहें।

यदि आप ज्यादा प्रार्थना नहीं करते, तो आप एक बैठी हुई बत्तख हैं, यदि आप ज्यादा आराधना नहीं करते, तो आप एक बैठी हुई बत्तख हैं।

आप जितना ज्यादा पिता के अधीन होते हैं, उतना ही आपका पिता के अधीन होना आसान हो जाएगा।

आप इसे जितना ज्यादा करते हैं, आप इसे उतना ही ज्यादा करना चाहेंगे, आप इसे जितना कम करते हैं, आप इसे उतना ही कम करना चाहेंगे।

जब आप परमेश्वर के साथ नहीं चलते, तब आप शैतान के साथ चलते हैं।

परमेश्वर और मैं कभी पक्षपात नहीं करते; हम उसी की ओर हैं जो सही करना चाहता है।

कोई भी स्वर्ग या नरक में अकेला नहीं जाता, आप हमेशा किसी न किसी को अपने साथ लाते हैं, आप जो कुछ थे या जो कुछ नहीं थे, उसके कारण आप किसी न किसी को प्रभावित जरुर करेंगे।

सेवक होने के नाते हमेशा ईश्वरीय परिणामों में रुचि लें, केवल मण्डली की वोटों या मण्डली की बढ़ती हुई गिनती में नहीं।

आपका काम चाहे कुछ भी हो, इसे विश्वासयोग्यता के साथ पूरा करें।

आराधना का समय बढ़ाने का कारण यह है कि मैं परिणामों में रुचि लेता हूँ, वोटों में नहीं।

यदि आप पढ़ सकते हैं तो आप जानते हैं कि यीशु ने क्या कहा, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि उसके कहने का अर्थ क्या है।

आप जान कर हैरान हो जाएँगे कि आप कितना सुन ही नहीं रहे। आपके पासबान के द्वारा काफी समय पहले दी गई शिक्षाओं को फिर से सुनें, आप यह जान कर हैरान हो जाएँगे कि आपने बहुत सारी बातें सुनी ही नहीं थीं।

चरित्र के बारे में

अधिकतर लोग घमण्ड में होते हुए भी नहीं जानते कि वे इस में हैं।

परमेश्वर आपमें, आपके द्वारा, आपके साथ जो कुछ भी करता है वह इस कारण नहीं होता कि आप कौन हैं।

आप जितना ज्यादा इस कारण से परमेश्वर के पास आते हैं कि आप कौन हैं – वह आप को उतना ही कम सुनेगा।

आपको परमेश्वर से प्राप्त करने के लिए अपने आप को दीन करना होगा।

आत्मविश्वास और घमण्ड में अंतर को समझें – आपको इस अंतर को समझने के लायक होना होगा।

घमण्ड की जाँच :

1. क्या आपको एक दास की तरह दिखना पसंद नहीं है?
2. क्या आप लगातार लोगों को निर्देश देते रहते हैं?
3. क्या आप दूसरे लोगों को मिलने वाली सराहना को चुरा लेते हैं?
4. जब आप असफल होते हैं तो कैसी प्रतिक्रिया करते हैं?
5. क्या आप जरुरत से ज्यादा प्रतिस्पर्धा करते हैं?
6. जब आपको कोई व्यक्ति कुछ देता है तो क्या आपके लिए इसे स्वीकार करना कठिन हो जाता है?
7. जब कोई आपको दुबारा नहीं बुलाता तो क्या आप नाराज़ हो जाते हैं?
8. जब लोग आपके कहे अनुसार नहीं करते तो आप कैसी प्रतिक्रिया करते हैं?
9. क्या आप किसी पदवी में जाने के लिए जबरदस्ती करते हैं?

10. जब आप आशीष पाते हैं तो आप कैसी प्रतिक्रिया करते हैं?

घमण्ड दूसरों की महानता को मान्यता नहीं देता, यदि ऐसा कर भी दे तो अनिच्छा से करता है।

यह पहचानना कि आप गलत हैं, मन फिराव की ओर पहला कदम है।

मन फिराव की प्रक्रिया का एक हिस्सा यह पहचानना है कि आप गलत थे। यदि आप बुरा लगने की वजह से इसे लगातार अनदेखा करते रहें तो आप मन नहीं फिरा पाएँगे। इसके बारे में बुरा लगना मन फिराव की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है।

संसार में ताकत/अधिकार की तस्वीर अंहकार की तस्वीर है।

कुछ लोग इसलिए अभिषेक खो देते हैं क्योंकि वे धन पर मन लगाने लगते हैं; कुछ लोग इसलिए अपने जीवन खो देते हैं क्योंकि वे क्रोधित मन वाले बन जाते हैं।

जो व्यक्ति किसी अधिकार के नीचे अधीनता में नहीं रह सकता वह अधिकार प्राप्त करने के भी लायक नहीं है।

यह हैरानीजनक है कि जब शैतान आपके पिछले आंगन में होता है तो कलीसिया की महत्त्वपूर्णता कितनी बढ़ जाती है।

विभिन्न दीपगृहों (लाइटहाउस) में कभी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती। हम सभी विश्वासी एक ही टीम में हैं और एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य कर रहे हैं।

प्रेम

लोग उस समय कितने शर्मिन्दा हो जाएँगे जब उन्हें पता चलेगा कि परमेश्वर ने उनसे कितना प्रेम किया परन्तु उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया।

यदि आप अपने शत्रुओं से प्रेम नहीं करते तो फिर कौन करेगा?

यदि आप किसी के लिए कोई भलाई नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा?

प्रभु की ओर से आशीष प्राप्त करने की एक शर्त है, प्रेम में चलना।

निश्चित कर लें कि आपका प्रेम इस कारण ठण्डा न हो जाए क्योंकि दूसरे लोग बुरे या दुष्ट हैं।

हो सकता है कि आप परमेश्वर से कुछ आशीषें प्राप्त करने में असफल हो जाएँ, परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम करने में असफल न हों, अन्यथा आप परमेश्वर के साथ असफल हो जाएँगे और खो जाएँगे।

''क्योंकि अधर्म के बढ़ जाने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा''। दृढ़संकल्प कर लें कि आप प्रेम में असफल न होंगे, क्योंकि प्रेम में अंत तक बने रहने वाला ही बचाया जायेगा।

यदि मसीही लोग प्रेम और क्षमा करने में न चलें तो शैतान उनके जीवन में अपनी पकड़ बना सकता है और बना लेता है। 1 कुरिन्थियों 11:30 पढ़ें। इसी कारण बहुतेरे लोग निर्बल हैं, रोगी हैं और कुछ तो शीघ्र ही मर जाते हैं – वे प्रेम में नहीं चलते।

विश्वास, आशा और प्रेम सदा के लिए स्थिर हैं, परन्तु प्रेम इनमें सबसे बड़ा है।

अनन्तता

यदि आप अपनी मृत्यु से पहले परमेश्वर की ओर से धर्मी घोषित नहीं किए गए तो मृत्यु के बाद नहीं किए जा सकते।

अनन्त जीवन केवल एक लम्बे समय तक रहने वाला जीवन ही नहीं है, बल्कि हमारे भीतर निवास करने आए परमेश्वर के आत्मा के द्वारा लाया गया गुणवत्ता वाला अस्तित्व है, (परमेश्वर का स्वभाव हमारी आत्मा में उण्डेल दिया गया है)। ऐसा परमेश्वर जिस का अस्तित्व कभी भी समाप्त नहीं हो सकता और जिसकी सामर्थ कभी भी समाप्त नहीं हो सकती।

अनन्तता सदाकाल के लिए है। अपने लिए उद्धार को सुनिश्चित कर लें। सदाकाल

का समय नरक में बिताने के लिए बहुत ज्यादा है।